

सत्र 7: व्यवस्थाविवरण 13-15

डॉ सिंधिया पार्कर

यह डॉ. सिंधिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह सत्र 7, व्यवस्थाविवरण 13-15 है।

समीक्षा एवं परिचय

पिछले व्याख्यान में, हमने व्यवस्थाविवरण 12 के बारे में बात की थी। हमने छात्रवृत्ति के इतिहास के बारे में थोड़ा बताया। तो, लोग पेंटाटेच से कैसे गुजरे हैं और उसका अध्ययन किया है, और उनमें से कितने नवाचार व्यवस्थाविवरण 12 के अध्ययन से सामने आए? लेकिन हम आगे बढ़े और इस बारे में बात की कि किसी चुने हुए स्थान को स्थापित करने के लिए कुछ तकनीकें क्या हो सकती हैं - एक एकल स्थान जहां लोग पूजा करने आते हैं।

हमने राष्ट्रीयता के निर्माण के महत्व के बारे में बात की। तथ्य यह है कि हम सभी इस्राएलियों के बीच एकता बनाने का प्रयास कर रहे हैं। तो, हम उस विषय को जारी रखने जा रहे हैं कि आप एक राष्ट्र का निर्माण कैसे करते हैं? आप लोगों को एकजुट कैसे बनाते हैं? और हम ऐसा करने जा रहे हैं क्योंकि हम कानून संहिता में गोता लगाना जारी रखेंगे। तो, इस कानून संहिता के साथ क्या हो रहा है? वे इन कानूनों की व्याख्या कैसे कर रहे हैं, और वे इस वास्तविक भूमि में इन लोगों पर कैसे लागू होते हैं? इसलिए, जब हम व्यवस्थाविवरण 13-15 को संलग्न करना शुरू करते हैं तो हमें कुछ अवधारणाओं पर विचार करने की आवश्यकता होती है। और वास्तव में, हम इन्हें कुछ अन्य अध्यायों में भी शामिल करेंगे।

राष्ट्रीय पहचान का निर्माण: "आप" एकवचन / "आप" सामूहिक

इसलिए, सबसे पहले, हम व्यक्तियों के साथ-साथ समुदाय की नैतिक और नैतिक ज़िम्मेदारी को भी देखना चाहते हैं। तो, व्यवस्थाविवरण, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, यहां तक

कि व्यवस्थाविवरण का उपयोग करने वाली भाषा में भी, "आप" एकवचन व्यक्ति है, और फिर "आप" सामूहिक निकाय व्यक्ति, और लोगों का समुदाय है। इसलिए, समुदाय एक के रूप में एकजुट है, जैसे आप एक व्यक्ति के रूप में एक हैं। और इसलिए व्यवस्थाविवरण में, लोगों की नैतिक जिम्मेदारियों के बारे में बात करते हुए, यह व्यक्ति और समुदाय दोनों है। और इसलिए, हम देखेंगे कि वे एक-दूसरे पर कैसे प्रभाव डालते हैं।

यात्रा से आगमन तक - उपहार के रूप में लैंग प्राप्त करना

हम यह भी देख रहे हैं कि लोगों ने पहली बार भूमि में कब प्रवेश किया। वे अब किसी चीज़ की ओर यात्रा नहीं करेंगे। इसलिए पहले, जैसा कि हम व्यवस्थाविवरण पर आने वाले पेंटाटेच को पढ़ते रहे हैं और हमने इसे व्यवस्थाविवरण के पहले कुछ अध्यायों में भी देखा है। इस भूमि की ओर एक यात्रा, एक बढ़ते आंदोलन की प्रतीक्षा की जा रही है जिसके बारे में भगवान ने कहा था कि वह अपने लोगों को देने जा रहा है। लेकिन अब, जैसे ही हम कानून संहिता संलग्न करते हैं, हम देख रहे हैं कि ये तब की कार्रवाइयां हैं जब वे आ गई हैं। और जब वे आ गए, तो कार्य यह नहीं रह गया कि क्या हम वहां सफलतापूर्वक यात्रा कर सकते हैं, बल्कि क्या हम सफलतापूर्वक इस उपहार की देखभाल कर सकते हैं जो हमें दिया गया है? तो, बदलाव उपहार प्राप्त करने की जिम्मेदारी बन जाता है। तो, हां, यह एक उपहार है जो मुफ्त में दिया जाता है, लेकिन इसके लिए यह आवश्यक है और मांग की जाती है कि व्यक्ति और समुदाय इसमें निवेश करें।

भाई और अपनापन

तो, अन्य चीज़ों में से एक जो हम देखने जा रहे हैं वह यह है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक इस्राएलियों को भाई कैसे कहती है। यह सब लोगों के बीच एकजुटता पैदा करने की कोशिश पर आधारित है। और हम इस विचार को देखेंगे जो विशेष रूप से अध्याय 15 में आएगा जब हम व्यवस्थाविवरण 15 पर पहुंचेंगे। लेकिन भाईचारे का यह विचार किसी भी जनजाति के नाम या यहां तक कि इन जनजातीय पहचान की पहचान करने की तुलना में अधिक बार उपयोग किया जाता है। यह एक अधिक एकजुट भाईचारा है, चाहे आप किसी भी जनजाति से हों।

हम यह भी पाएंगे कि व्यवस्थाविवरण अपनेपन के बारे में काफी कुछ बात करता है। इसलिए उन्हें यह ज़मीन उपहार के रूप में मिलती है। लेकिन अपनी जगह पर जड़ें जमा लेने में कुछ तो बात होती है, और इसके लिए एक निश्चित मात्रा में निवेश और उद्देश्यपूर्ण व्यवहार की आवश्यकता होती है। और फिर लोग न केवल एक समुदाय के रूप में एक-दूसरे के होते हैं, बल्कि फिर वे ज़मीन के भी होते हैं।

भूमि पर कब्ज़ा करना और निवास करना

तो, अपनेपन की यह अवधारणा, और हम यह भी कह सकते हैं कि भूमि इस्राएलियों की है। यह हमारे लिए दो अलग-अलग क्रियाएं, दो अलग-अलग हिब्रू क्रियाएं सामने लाएगा। पहला है *येरैश*, "अधिकार रखना।" अब यह किसी चीज़ पर मालिकाना हक़ रखने का कानूनी अधिकार जैसा होगा। इसका अक्सर उस पिता से कुछ लेना-देना होता है जो अपने बेटे को विरासत सौंपता है। तो, यह स्वामित्व का कानूनी अधिकार है।

और व्यवस्थाविवरण में, यह इस बारे में बात करता है कि कैसे परमेश्वर इस्राएलियों को भूमि पर कब्ज़ा करने का अधिकार दे रहा है। लेकिन यह इस बारे में भी बात करता है कि इस्राएलियों को विभिन्न प्रकार की संपत्ति या संपत्ति की भूमि पर कैसे रहना, और रहना आवश्यक है। इसलिए, जब आप रहते हैं, तो एक सक्रिय भावना होती है कि वे इस भूमि पर रहने की दिशा में काम कर रहे हैं। यह एक पूर्ण मानव अस्तित्व स्थापित करने के लिए अच्छी तरह से जीने की निरंतरता है। यह भविष्य में बहुत दूर तक देख रहा है। अतः इस प्रकार का आवास अच्छा है। इसलिए, हमारे पास कानूनी स्वामित्व है, लेकिन आप एक जगह पर कब्ज़ा कर सकते हैं और उसमें अच्छी तरह से नहीं रह सकते।

व्यवस्थाविवरण इस बात से बहुत चिंतित है कि जब इस्राएली भूमि पर कब्ज़ा करने के लिए जाते हैं, तो इसकी दूसरी अवधारणा दूसरे लोगों के समूह को बेदखल करना है, कि इस्राएली अंदर जाते हैं और वे भूमि पर कब्ज़ा कर लेते हैं। वह पर्याप्त नहीं है। उन्हें भी इस तरह रहने और रहने की ज़रूरत है कि इससे एक बहुत ही मानवीय, सुंदर, पूर्ण सामुदायिक जीवन विकसित हो।

व्यवस्थाविवरण 13 - झूठे भविष्यवक्ताओं से निपटना

तो, आइए व्यवस्थाविवरण 13 में प्रवेश करें। तो, यह थोड़ा समस्याग्रस्त अध्याय है। जब आप इसे पढ़ते हैं तो यह काफी असहज लगता है। तो, हमारे पास अध्याय है, जो लोगों के तीन अलग-अलग वर्गों में विभाजित है। तो सबसे पहले, हम इस संबोधन को भविष्यवक्ताओं, विशेष रूप से झूठे भविष्यवक्ताओं को खोजने जा रहे हैं। और फिर यह भाइयों और दोस्तों को संबोधित करेगा, ऐसे घनिष्ठ लोग जिनसे आप घनिष्ठ रूप से परिचित हैं। और फिर यह उन लोगों को संबोधित करेगा जो शहरों में जाते हैं और पूरे शहरों को प्रेरित करते हैं। तो, आइए इस पर एक नज़र डालें और सोचना शुरू करें कि इस अध्याय का क्या अर्थ हो सकता है।

तो, व्यवस्थाविवरण 13. मैं पद 1 से पढ़ना शुरू करूंगा। "यदि कोई भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाला तुम्हारे बीच में उठे, और तुम्हें कोई चिन्ह या चमत्कार दिखाए, और जिस चिन्ह या चमत्कार के विषय में उस ने तुम से कहा था वह सच हो जाए।" 'आओ हम दूसरे देवताओं के पीछे चलें जिन्हें तुम नहीं जानते, और उनकी उपासना करें।' तुम उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखनेवाले की बातें न सुनना। क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा यह जानने के लिये तुम्हारी परीक्षा कर रहा है कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण से प्रेम रखते हो या नहीं। तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करना चाहिए और उससे डरो; उसकी आज्ञाओं को मानना, उसकी वाणी सुनना, उसकी सेवा करना, और उस से लिपटे रहना।

और अब तक, यह ठीक लगता है, है ना? हमें झूठे भविष्यवक्ता नहीं चाहिए. और हम बहुत कड़ी चेतावनी सुन रहे हैं जो हम सुन रहे हैं। इसे अब काफी दोहराया जाने लगा है. अन्य देवताओं का अनुसरण मत करो; केवल एक ही ईश्वर है जिसका आप अनुसरण करते हैं।

हालाँकि, जब हम पद 5 पर पहुँचते हैं, तो यह है "जब आप अपने बीच एक झूठा भविष्यवक्ता पाते हैं, तो आपको यही करना चाहिए।" श्लोक पांच. "परन्तु उस भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाले को मार डाला जाएगा, क्योंकि उस ने तेरे परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध बलवा करने

की युक्ति की है, जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया, और दासत्व के घर से छुड़ाकर तुझे यहोवा के मार्ग से भटका देता है। " तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें चलने की आज्ञा दी है। इसलिये तुम अपने बीच से बुराई को दूर करोगे।"

और तभी हम थोड़ा सा घबरा जाते हैं और कहते हैं, हे मृत्यु। ठीक है। ठीक है, हो सकता है, आपके बीच कोई झूठा भविष्यवक्ता हो, बस थोड़ा सा रुकें, और देखें कि क्या कोई अन्य पैटर्न है जो इस पूरे अध्याय में विकसित होना शुरू होता है।

परिवार के किसी सदस्य/अंतरंग मित्र के साथ व्यवहार करना, प्रभु से दूर ले जाना

तो अब हम आगे बढ़ते हैं, और हमें श्लोक छह मिलता है, "यदि आपका भाई या आपकी मां बेटा, या बेटा या बेटा या पत्नी जिसे आप प्यार करते हैं, या आपका दोस्त जो आपकी अपनी आत्मा के समान है।" तो मूल रूप से, उन लोगों को सूचीबद्ध करना जिनसे आप घनिष्ठ रूप से परिचित होंगे, आपका सबसे अच्छा दोस्त, परिवार का कोई सदस्य। यदि उन लोगों में से कोई आपको प्रभु से दूर ले जाए तो क्या होगा? इसलिए, यदि उन लोगों में से कोई भी आपसे घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, जो आपको गुप्त रूप से यह कहते हुए लुभाता है, 'आओ हम जाकर अन्य देवताओं की पूजा करें, जिन्हें न तो आप और न ही आपके पिता जानते थे, उन लोगों के देवताओं में से जो आपके आस-पास, आपके पास हैं और पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक अपने से दूर न रहना, और न उसकी मानना, और न उस पर दया करना, और न उसे छोड़ना, और न छिपाना, परन्तु निश्चय उसे मार डालना। उसे मार डालने के लिये पहले तेरा हाथ उसके विरुद्ध उठे, और उसके बाद प्रजा का हाथ चले। उस पर पत्थरवाह करके मार डालना, क्योंकि उस ने तेरे परमेश्वर यहोवा से जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है, उस से बहकाना चाहा है। और दासत्व के घर से निकल जाओगे। और तब सब इस्राएल सुनकर डरेंगे, और तुम्हारे बीच फिर कभी ऐसा बुरा काम न करेंगे।

ठीक है, इसे निगलना झूठे भविष्यवक्ता से थोड़ा अधिक कठिन है क्योंकि ये आपके परिवार से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए लोग हैं। और यह कहता है कि वे लोग जो आपके पास आते हैं और गुप्त रूप से आपको दूर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। यह उतना ही बुरा है। यह बिल्कुल

उसी सज़ा की मांग करता है जो एक झूठा भविष्यवक्ता मांगता है। अतः तुम अपने में से उस मनुष्य को मार डालो।

शहर के निवासी अन्य देवताओं के बाद दूसरों का नेतृत्व कर रहे हैं

और हम आगे बढ़ते हैं, और हम अध्याय 13 के अंतिम भाग में इसे थोड़ा और बढ़ाते हैं। "यदि तुम अपने नगरों में से किसी में जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिए दे रहा है, किसी को यह कहते हुए सुनो कि कुछ निकम्मे आदमी चले गए हैं और अपने बीच में से निकलकर नगर के निवासियों को यह कहकर बहकाया है, कि आओ, हम चलकर पराए देवताओं की उपासना करें जिन्हें तुम नहीं जानते। तब तुम जांच-पड़ताल करना, और खोज-बीन करना, और भली-भांति पूछताछ करना। यदि यह सच हो, और यह बात पक्की हो जाए, कि यह घृणित काम तुम्हारे बीच हुआ है, तो निश्चय उस नगर के निवासियों को तलवार से मार डालो, और उसे और उस सब को सत्यानाश कर दो। वह और उसके पशु तलवार की धार से मारे गए हैं।"

सज़ा को उसके संदर्भ में रखना

ओह, तो अब हमारे पास पूरे शहर हैं जो नष्ट हो रहे हैं, साथ ही शहर का सारा सामान और शहर के जानवर भी। तो, यह सब वास्तव में काफी कठोर लग सकता है, लेकिन आइए इसे इस संदर्भ में रखें कि व्यवस्थाविवरण क्या कर रहा है। क्योंकि जब हम ऐतिहासिक रिकॉर्ड देखते हैं, और जब हम पुरातात्विक खोजों को देखते हैं, और जब हम चारों ओर देखते हैं, तो हम देखते हैं, हम वास्तव में नहीं सोचते हैं कि इज़राइलियों ने कभी इस प्रकार के कानूनों को लागू किया था जहां वे वास्तव में अपने बच्चों को मार रहे थे क्योंकि हम जानते हैं कि ईश्वर बच्चों की हत्या के विरुद्ध है, और हम यह नहीं सोचते कि उन्होंने अपने ही नगरों के निवासियों को मार डाला। तो यहाँ व्यवस्थाविवरण में क्या हो रहा है?

क्या होगा यदि व्यवस्थाविवरण एक राष्ट्र, एक लोगों का समूह स्थापित करने की कोशिश कर रहा है, जहां आप जा सकते हैं और वे एक साथ रह सकते हैं। वे एक साथ रहते हैं। और यदि व्यवस्थाविवरण आगे बढ़ रहा है, तो यह विचार है कि जिस स्थान पर वे जा रहे हैं उसे ईडन की

तरह बनने का अवसर है, ईडन जितना अच्छा था, उस डिजाइन का पालन करने के लिए जिसे ईश्वर ने सृष्टि की शुरुआत में भी स्थापित किया था। यदि यही लक्ष्य है, तो कुछ भी, चाहे वह झूठा भविष्यवक्ता हो, चाहे वह आपसे घनिष्ठ रूप से जुड़ा कोई व्यक्ति हो, या कोई ऐसा व्यक्ति जिसने पूरे शहर के दिमाग को बदल दिया हो, जिसे आपके बीच से खत्म करने की आवश्यकता है।

तो, बहुत कड़ी भाषा का उपयोग करते हुए, बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि सभी चीजों में, ईश्वर चाहता है कि उसके लोग केवल उससे और केवल उससे प्रेम करें। तो, भगवान हमारा भगवान, भगवान एक है, जहां भगवान ही एकमात्र और एकमात्र भगवान है।

तो अध्याय 13, हालांकि हमें अपनी सीटों पर थोड़ा हिलने पर मजबूर करता है, यह कहता है, क्या यह एक व्यक्ति है जो शहर को लुभाने की कोशिश कर रहा है, क्या यह आपके घर का कोई करीबी व्यक्ति है, क्या यह कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने पूरे शहर को इसके लिए राजी किया है दूर हो जाओ, जैसे ही तुम ईश्वर से दूर चले जाते हो और अन्य देवताओं का अनुसरण करने लगते हो, तुम्हें उसे अपने बीच से मिटा देना होगा क्योंकि वह कुछ ऐसा है जो ईश्वर की दृष्टि में घृणित है।

अब आप कह सकते हैं, और बहुत से लोग इस बारे में बात करते हैं कि सज़ा इतनी कड़ी क्यों है। ठीक है, हमारे पास इसका कोई सटीक उत्तर नहीं हो सकता है, हालांकि कुछ लोगों ने माना है कि यह इस विचार के साथ जा सकता है या भागीदार हो सकता है कि इस्राएलियों को ईश्वर के पुत्र कहा जाता है। इसलिए, यदि इस्राएल परमेश्वर का पुत्र है, यदि इस्राएल परमेश्वर से विमुख हो जाता है, तो वह सज़ा मृत्यु है। और इसलिए अध्याय 13, यहां तक कि अपने ही घर में बेटे के बारे में बात करते हुए, आपको अपने ही घर में बेटे को क्यों मारना पड़ता है? खैर, आपके अपने घर का बेटा ईश्वर के साथ आपके रिश्ते में राष्ट्र के रूप में आपका प्रतिनिधित्व करता है। तो यह उत्तर का हिस्सा हो सकता है।

अध्याय 13 में हमें जो मिल रहा है वह यह है कि इज़राइली एक ऐसे समुदाय को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं जो एक साझा कथा द्वारा एकीकृत है। उन्हें परमेश्वर के लोगों के समान पहचान के आधार पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

व्यवस्थाविवरण 14: परमेश्वर के लोगों के रूप में अपनी पहचान स्थापित करना

तो, इसके आधार पर, आप अपनी पहचान कैसे स्थापित करने का प्रयास करते हैं और भगवान के लोगों के रूप में अपनी पहचान को कैसे याद रखते हैं? हम अध्याय 14 की ओर बढ़ते हैं।

तो, अध्याय 14 में, हमने शुरुआत में ही, उनकी पहचान क्या है, इसकी स्थापना कर दी है। दरअसल, हमें अपनी पहचान समझाने के लिए दो अलग-अलग तरह के वाक्य या वाक्यांश मिलते हैं। तो, व्यवस्थाविवरण 14:1 में, यह कहा गया है, "तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पुत्र हो।" तो फिर, आप प्रभु के पुत्र हैं और इसलिए उस पहचान और पद 2 में वाक्यांश के आधार पर, "आप प्रभु, अपने भगवान के लिए एक पवित्र लोग हैं। और प्रभु ने आपको अपने लिए एक लोग बनने के लिए चुना है पृथ्वी भर के सब लोगों का अधिकार छीन लो।" तो, आप भगवान के पुत्र हैं, और आपको चुना गया है। तो, यह वह पहचान है जो अध्याय 14 की शुरुआत में स्थापित की गई है, जो, फिर, अध्याय 14 के नियमों के लिए प्रेरणा बनाती है।

खाद्य कानून और पहचान

अब, हम "इसलिए ऐसे खाएं" की एक पूरी सूची में प्रवेश करते हैं। इसलिए, यह सूची बिल्कुल स्वच्छ और अशुद्ध खाद्य पदार्थों की सूची के समान नहीं है जो हमें लेविटिकस में दी गई है। किसी भी सूची में सभी समान जानवरों को सूचीबद्ध नहीं किया गया है, लेकिन हमें जानवरों के समान मूल समूह मिलते हैं। तो, हवा में उड़ने वाले जानवर, धरती पर रहने वाले जानवर, और समुद्र में रहने वाले जानवर या मछलियाँ।

तो, हम यहाँ व्यवस्थाविवरण 14 में उसी प्रकार के समूह देखते हैं। दिलचस्प बात यह है कि यह अध्याय, सबसे पहले, इस विचार से तैयार किया गया है कि आपको श्लोक 3 में खाना नहीं खाना चाहिए, "आपको कोई घृणित वस्तु नहीं खानी चाहिए।" खैर, यह शब्द बिल्कुल वही हिब्रू शब्द है जो 13:14 में पाया गया था जब यह उन्हें आपके बीच किए गए हर घृणित या घृणित काम से छुटकारा पाने के लिए कहता है। इसलिए, हम विचारों की निरंतरता देख रहे हैं। तो, जहां

अध्याय 13 में, यह लोग और व्यवहार था; अध्याय 14 में, आप जो भोजन खाते हैं उसका चयन भी इस आधार पर करें कि क्या घृणित है या क्या घृणित नहीं है।

एकीकृत पहचान के रूप में कोषेर भोजन

तो, भोजन वास्तव में काफी शक्तिशाली प्रतीक है। तो, आपके खाने का तरीका आपको अलग कर सकता है। जैसे-जैसे आप चुनने, जानबूझकर चुनने, क्या खाना है और क्या अस्वीकार करना है, के कार्य से गुजरते हैं, आप एक जन समूह के हिस्से के रूप में अपनी पहचान मजबूत कर रहे हैं। और आप अपने आप को ऐसे लोगों के एक पूरे समूह में रखते हैं जो एक ही प्रकार के निर्णय ले रहे हैं। और विशेष रूप से यदि आप यह पवित्रता कर रहे हैं, तो शुद्ध क्या है, और अशुद्ध प्रकार का पदनाम क्या है? यह आपके लिए बार-बार पुष्टि कर रहा है कि आप एक शुद्ध लोग हैं क्योंकि भगवान ने आपको चुना है। आपको उसके लिए अलग रखा गया है, और यह इस बात से भी पता चलता है कि आप अपने घर में एक व्यक्ति के रूप में बल्कि एक समुदाय के रूप में भी खाना चुनते हैं। तो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस इज़राइली शहर में जा रहे हैं, लोग कोषेर कानूनों के अनुसार खा रहे हैं।

गैर-इज़राइली भोजन

अब, एक चीज़ जो मुझे वास्तव में दिलचस्प लगती है वह यह है कि जब हम सभी जानवरों की सूची का अनुसरण करते हैं, तो हम अभी भी इस विचार पर काम कर रहे हैं कि कोषेर क्या है और कोषेर क्या नहीं है और आप गैर-कोषेर भोजन के साथ क्या करते हैं .

श्लोक 21 में हमारे पास यह और स्पष्टीकरण है, "जो वस्तु अपने आप मर जाती है उसे तुम न खाना। तुम उसे अपने नगर में रहने वाले परदेशी को दे देना, कि वह उसे खा सके, या तुम उसे अपने लिये किसी परदेशी के हाथ बेच सकते हो।" तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र लोग हो। बकरी के बच्चे को उसकी मां के दूध में न पकाना।

ठीक है, तो यदि हम उस श्लोक के अंतिम भाग को छोड़ दें और कहें, यह एक अजीब कानून है, यदि आप बाहर जाते हैं और यदि कोई जानवर है जो अपने आप मर गया है, तो आप

बाहर नहीं गए और उसका शिकार नहीं किया या इसे मार डालो या वध कर दो। आप उस मांस का क्या करते हैं? तो, फिर से खुद को याद दिलाते हुए कि यह एक ऐसा जन समूह है जो निर्वाह कर रहा है। इसलिए, वे ज़मीन से दूर रह रहे हैं। इसलिए, खाने के लिए उपलब्ध कोई भी मांस एक मूल्यवान वस्तु है। क्या आप उसे यूँ ही फेंक देते हैं? इसे खेत में सड़ने दो? आप इस मांस का क्या करते हैं?

निवासी एलियन (गेर) और विदेशी

और फिर इस्राएलियों को इसे परदेशियों को देने की अनुमति दी, परन्तु विदेशियों को नहीं। यह एक यादृच्छिक कानून प्रतीत होता है। इसका क्या मतलब है? यह तब होता है जब हमारे लिए थोड़ा सा शब्द अध्ययन करना सहायक होता है। तो, कविता के पहले भाग में, हमारा विचार यह है कि आप उस मांस को गेर को दे सकते हैं। इसलिए गेर का अनुवाद कभी-कभी "विदेशी", कभी-कभी "विदेशी" के रूप में किया जाता है। ये वे लोग हैं जो आवश्यक रूप से जातीयता से इस्राएली नहीं हैं, लेकिन वे विदेशी हैं सिवाय इसके कि वे आपके बीच स्थायी रूप से रहते हैं।

अब वे आपके बीच रह सकते हैं, लेकिन सबसे अधिक संभावना है, उनके पास जमीन नहीं है, और यदि आपके पास जमीन नहीं है, तो आप समाज के ऊपरी स्तर तक नहीं पहुँच पाएंगे। आपके पास अपनी खुद की कृषि भूमि नहीं होगी जिसका आप उपयोग कर सकें। यदि आप गेर हैं, यदि आप इस्राएलियों के बीच रहने वाले एक विदेशी हैं, तो संभवतः आप गरीब और अलग-थलग हैं। तो, आप उस समाज के कमजोर लोगों में से एक हैं।

यह उसी श्लोक में प्रयुक्त दूसरे शब्द से भिन्न है। तो, *नहीं*, इस शब्द का अर्थ है "विदेशी, प्रवासी।" इसके कई अलग-अलग अंग्रेजी अनुवाद हो सकते हैं। यह वह व्यक्ति है जो स्थायी रूप से किसी दूसरे देश में रहता है। तो, एक मिस्री जिसके पास एक कारवां हो सकता है और वह वहां से गुजर रहा है क्योंकि सभी व्यापार मार्ग आपकी भूमि से होकर गुजरते हैं। तो, संभवतः उस

व्यक्ति के पास घर पर ही अपना स्वयं का सामाजिक नेटवर्क है। हो सकता है, क्योंकि वे यात्रा कर रहे हों और वहां से गुजर रहे हों, उन्हें थोड़ा अधिक आर्थिक लाभ हो, या हो सकता है कि उनके पास संसाधन उपलब्ध हों।

तो, व्यवस्थाविवरण, यह पहचानने में कि आपके बीच एक गैर है, आपके पास एक विदेशी है जो संभवतः अनाथ और समाज में कमजोर लोगों की विधवा जैसा होगा। इसलिए, यदि तुम्हें कोई मरा हुआ जानवर मिले, तो उसे विदेशियों को दे दो, और उन्हें खाने दो। उन्हें उस मांस से लाभ उठाने दें। या आप इसे बेच सकते हैं, और आप इसे किसी ऐसे व्यक्ति को बेच सकते हैं जो वहां से गुजर रहा हो।

भगवान अपने लोगों के साथ दावत कर रहे हैं

इसलिए, देने या बेचने का उस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति से अधिक लेना-देना है जो उस उपहार का लाभ प्राप्त कर रहा है।

अध्याय 14 का अंत वास्तव में यह बहुत बढ़िया प्रदान करता है, "यदि आप उस स्थान पर जा रहे हैं जिसे भगवान ने चुना है और आप बहुत दूर रहते हैं।" मूल रूप से, अपने साथ कुछ कबूतर या बकरियों को लाने के लिए एक छोटे जानवर को लाना काफी कठिन और अव्यावहारिक है। तो, व्यवस्थाविवरण कहता है, बस उस पैसे को अपनी जेब में रखो और फिर उस स्थान के सामने खड़े हो जाओ जिसे भगवान ने चुना है, जो कुछ भी तुम बलिदान करना चाहते हो उसे खरीद लो, "और फिर वहां अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाओ और उसके साथ जश्न मनाओ।" यह इन महान छंदों में से एक है, या छंदों का संग्रह है, जो हमें दिखाता है कि भगवान अपने लोगों के साथ कितना आनंद लेना चाहते हैं। भते हैं, हां, इसलिए कुछ विशेष प्रकार के बलिदान हैं जो आपको अलग-अलग कारणों से करने होंगे, लेकिन हो सकता है कि आपका भत्ता बहुत दूर से जा रहा हो। बस आपकी जेब में सिक्के हैं, वहां पहुंचें, वह चीज खरीदें जिससे आपको खुशी होगी, और फिर अपने बीच में भगवान के साथ दावत करें।

तो, फिर से, अध्याय 14 में छंदों का एक संग्रह जो इस्राएलियों को भगवान के लोगों के रूप में उनकी पहचान के बारे में सोचने और खुद को याद दिलाने और खुद को भगवान के लोगों के रूप में सोचने में मदद कर रहा है।

व्यवस्थाविवरण 15 भाईचारा, उदारता, और धार्मिकता

जब हम अध्याय 15 में आगे बढ़ते हैं, तो हमें अधिक से अधिक शब्दावली प्राप्त होने लगती है जो लोगों के बीच इस भाईचारे को विकसित कर रही है। तो अध्याय 15, हमारे पास भाई की पुनरावृत्ति है, और पूरे अध्याय 15 में हमारे पास यही विचार है। यह एक आह्वान है, आप कैसे कार्य करते हैं? आप कैसे निवास करते हैं? इस देश में जो परमेश्वर तुम्हें दे रहा है, तुम एक साथ कैसे अच्छे से रहोगे ? और कार्रवाई के आह्वान का एक हिस्सा उदार होना है। और आपको उदार क्यों होना चाहिए? अध्याय 15 बार-बार दोहराया जाता है। तुम्हें उदार होना चाहिए क्योंकि ईश्वर तुम्हारे प्रति उदार है।

क्योंकि जब आप अपने अतीत को देखते हैं, तो ईश्वर ही वह है जो आपके प्रति उदार रहा है, इसलिए कार्य करें, ईश्वर की नकल करें, ईश्वर के चरित्र की नकल करें।

तो, अध्याय 15 में हमें यह आह्वान भी मिलता है कि धार्मिकता सिर्फ पाप न करने से कहीं अधिक है, जिससे हमारे लिए यह सोचना आसान हो जाता है कि मुझे बस ये सभी भयानक चीजें नहीं करनी हैं। व्यवस्थाविवरण का अध्याय 15 कहता है कि ऐसा नहीं है। इसकी धार्मिकता भगवान के चरित्र की नकल करना है, जिसका अर्थ है कि ये सभी अन्य सुंदर चीजें भी करना जो भगवान ने भी की हैं।

हर 7 साल में कर्ज माफ़ करना

तो, आइए अध्याय 15 को देखें क्योंकि यह इस्राएलियों के लिए कार्रवाई के आह्वान में काफी दिलचस्प है। तो, यह यह कहकर शुरू होता है, "हर सात साल के अंत में, आप ऋणों की माफी देंगे। यह माफी का तरीका है। प्रत्येक लेनदार को वह जारी करना होगा जो उसने अपने

पड़ोसी को उधार दिया है। वह इसे वसूल नहीं करेगा उसके पड़ोसी और उसके भाई क्योंकि प्रभु की क्षमा की घोषणा की गई है।"

हालाँकि, "तुम्हारे बीच कोई गरीब नहीं होगा क्योंकि यहोवा तुम्हें और उस देश को भी आशीर्वाद देगा जो तुम्हारा भगवान तुम्हें विरासत में दे रहा है। यदि केवल तुम सुनोगे और अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानोगे और जितनी आज्ञाएं मैं आज तुझे सुनाता हूँ उन सभीको ध्यान से मानना। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे आशीष देगा, और तू बहुत सी जातियोंको उधार देगा, परन्तु उधार न लेगा। और तू बहुत सी जातियोंपर प्रभुता करेगा, परन्तु वे तुम पर शासन नहीं करेंगे।"

ठीक है, अब तक बहुत अच्छा है। यह यह सुनिश्चित करने के लिए है कि आप गरीबों को गरीब बनाए रखने वाली अन्याय की व्यवस्था लागू नहीं कर रहे हैं। तो फिर, जो लोग जमीन के मालिक होकर अपना गुजारा कर रहे हैं, उनके लिए पीढ़ियों तक अपनी विरासत को बनाए रखने में सक्षम होना ही आपके परिवार के जीवित रहने का तरीका है। इसलिए, यदि आपके पास ऐसी व्यवस्था है जो लोगों को गुलामी में डालती है, अगर उन्हें अपनी जमीन आपको बेचने के लिए मजबूर किया जाता है, और अब वे आपके लिए गिरमिटिया नौकर हैं। इसने इस विचार को खंडित कर दिया है कि भगवान ने अपने लोगों को समान रूप से दिया है। और इसलिए एक चेतावनी है कि ऐसी मौद्रिक प्रणालियाँ स्थापित न करें जो लोगों को हमेशा-हमेशा के लिए गिरमिटिया नौकर बनने के लिए मजबूर कर दे।

आप यह क्यों करते हैं? आप ऐसा करने के लिए क्यों प्रेरित होंगे? क्योंकि ईश्वर ही वह है जो तुम्हें आशीर्वाद दे रहा है, याद है? याद रखें, अध्याय 11 में, ईश्वर ही वह है जिसकी नज़र इस भूमि पर है, और वह ही है जो शुरुआती और आखिरी बारिश देता है। इसलिए, विनम्र बने रहने का प्रयास करें और इस तथ्य से अवगत रहें कि यह पहले से ही भगवान का उपहार है, और चूंकि यह भगवान का अपने लोगों को उपहार है, वे ही हैं जो उस उपहार का प्रबंधन कर रहे हैं और इसे अच्छी तरह से प्रबंधित कर रहे हैं।

गरीब भाई की देखभाल

तो, हमारे पास यह विचार है जो आदर्श रूप से दिया गया है, "आपके बीच कोई गरीब नहीं होगा"। क्योंकि परमेश्वर तुम्हें वह सब कुछ देगा जिसकी तुम्हें आवश्यकता है, और कोई भी गरीब नहीं रहेगा। और फिर व्यवस्थाविवरण कहता है, जब तक वहाँ गरीब नहीं होंगे, और इसलिए जब गरीब होंगे, तो आपको इसी तरह कार्य करना होगा।

तो, पद 7 में, "यदि तेरे साथ कोई कंगाल मनुष्य, अर्थात् तेरे भाइयों में से एक है।" तो, फिर से, यह एक भाईचारे का विचार है। "तुम्हारे देश में जो नगर तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है, उन में से किसी में भी अपना मन कठोर न करना, और अपने दरिद्र भाई से अपना हाथ बन्द न करना।"

यह वास्तव में हमारे दृष्टिकोण या गरीबों के प्रति इस्राएलियों के दृष्टिकोण के बारे में बात करने वाला है। मैं चाहता हूँ कि आप सुनें, वे शरीर के अंग हैं जिनका उल्लेख किया गया है। शरीर के इन अंगों का मतलब वास्तव में कुछ खास है। तो, ध्यान दें.

शरीर के अंग

इसलिए, मैं श्लोक 7 को फिर से पढ़ूंगा, "यदि तुम्हारे देश में, जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है, किसी नगर में तुम्हारे भाइयों में से कोई तुम्हारे संग कोई कंगाल हो, तो तुम अपना मन कठोर न करना, और न अपना हृदय कठोर करना।" अपने कंगाल भाई से हाथ छुड़ाओ, परन्तु अपना हाथ उसके लिथे खोलो, और जिस वस्तु की उसे घटी हो उस के लिथे उदारता से उसे उधार दो। सावधान रहो, कि तुम्हारे मन में यह कहने का कोई तुच्छ विचार न हो, कि सातवां वर्ष, क्षमा का वर्ष है। निकट है, और तेरी आंख तेरे कंगाल भाई से बैर रखती है, और तू उसे कुछ नहीं देता। तब वह तेरे विरुद्ध यहोवा की दोहाई देगा, और यह तेरे लिथे पाप ठहरेगा। तू उदारता से उसे देना, और तेरा मन प्रसन्न रहेगा। जब तुम उसे देते हो तो दुखी होते हो, क्योंकि इस बात के कारण यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें सब कामों और सब कामों में आशीष देगा। क्योंकि तुम्हारे देश में कंगाल कभी न रहेंगे। इसलिये मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ तू अपना हाथ अपने भाई, अर्थात् अपने देश के दरिद्रों, और दरिद्रों की सहायता के लिये खोल सकता है।

तो, आपने शरीर के किन अंगों को बार-बार दोहराया हुआ सुना? सबसे अधिक बार दोहराया जाने वाला एक है हाथ। अपना हाथ खोलो, है ना? और हमने सीमांत स्थानों को चिह्नित करने के विचार के बारे में बात की, और हमने इस बारे में बात की कि इन शब्दों को अपने हाथ पर चिह्नित करना कितना महत्वपूर्ण है क्योंकि आपका हाथ आसपास मौजूद अन्य लोगों के साथ आपकी बातचीत का माध्यम है। इसलिए, व्यवस्थाविवरण गरीबों से कहता है, अपना हाथ बंद मत करो।

और फिर हमारे पास भी हृदय है, इसलिए हृदय, जैसा कि आपकी धारणा में है, लोगों के बारे में आपके बौद्धिक मूल्यांकन में, इसलिए हृदय हालांकि हम सोचते हैं कि हृदय भावनाओं का स्थान है, हृदय बुद्धि का स्थान है और जिस तरह से आप हैं अन्य लोगों को समझने में देखना।

तो, ये छंद कहते हैं, हृदय, हाथ, हाथ, हृदय और फिर आँख। याद रखें कि आँख, फिर से, आपके आस-पास मौजूद अन्य लोगों का आपका मूल्यांकन है। इसलिए सावधान रहें कि इसे बंद न करें या अपनी आँखें बंद न करें, या इसके प्रति अंध न बनें या बहुत कठोर मूल्यांकन न करें। लेकिन इसके बजाय, खुलना, और स्वतंत्र रूप से देना, यह सुनिश्चित करना कि आपका दिल खुला है, कि आपकी आँखें खुली हैं, और आपका हाथ फैला हुआ है। और आप ऐसा क्यों करते हैं? यह तुम्हारा भाई है। यह आपकी भूमि में आप में से एक है, और क्योंकि ईश्वर ही वह है जिसने आपको दासता से मुक्त कराया है। और इसलिए यदि भगवान के कार्यों ने एक काम किया है, तो आपको भगवान के कार्यों की नकल करनी चाहिए और वैसा ही करना चाहिए।

श्लोक 12 में हमारा यह भी विचार है कि "यदि तेरा कोई कुटुम्बी कोई इब्री पुरुष वा स्त्री तेरे हाथ बेचे, तो वह छः वर्ष तक तेरी सेवा करेगा, परन्तु सातवें वर्ष में तू उसे स्वतंत्र कर देना। जब तू उसे स्वतंत्र कर दे, तू उसे खाली हाथ न भेजना।" दूसरे शब्दों में, उन्हें वास्तव में अच्छा विच्छेद वेतन दें। वे इन सभी वर्षों में मुफ्त में काम कर रहे हैं, आपका कर्ज चुका रहे हैं, लेकिन जब वे चले जाएं, तो सुनिश्चित करें कि वे इस तरह से जाएं जिससे उन्हें किसी और का गुलाम न बनने का मौका मिले, बल्कि उन्हें इसका फायदा मिले। निवेश करने का अवसर और या तो अपनी मातृभूमि

को वापस खरीदने में सक्षम होने या चक्की के पत्थर प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए जिसकी उन्हें आवश्यकता है ताकि वे फिर एक मूल्यवान जीवन जी सकें।

एक सदाबहार सेवक

श्लोक 14 में, "तू उसे अपनी भेड़-बकरियों, और अपने खलिहान, और अपने दाखमधु के कुण्ड में से उदारतापूर्वक देना। जैसा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आशीर्वाद दिया हो, वैसा ही तू उसे देना। तू स्मरण रखना, कि तू दास था।" मिस्र देश को, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया है। इस कारण मैं आज तुझे आज्ञा देता हूँ। यदि वह तुझ से कहे, 'मैं तेरे पास से न निकलूंगा,' तो ऐसा ही होगा, क्योंकि वह तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता है, क्योंकि उसका हाल अच्छा है। तब तू सूआ लेकर द्वार में उसका कान छेदना, और वह सर्वदा उसका दास बना रहेगा। फिर तू अपनी दासी के साथ भी ऐसा ही करना। तो, विचार यह है कि आप उन्हें नियंत्रित करें या न करें, इसे नौकर पर छोड़ दें, स्वामी के रूप में आप पर निर्भर नहीं।

इज़राइल में सामाजिक नैतिकता

तो, हम इन छंदों और अध्याय 15 में पाते हैं कि हमें उस सामाजिक नैतिकता की झलक मिल रही है जो इज़राइली लोगों से अपेक्षित है। और फिर, हम व्यवस्थाविवरण के ढोल की थाप को सुन रहे हैं जिसमें ईश्वर अपने लोगों को विधियाँ और आज्ञाएँ दे रहा है। उनमें ऐसी आज्ञाएँ शामिल हैं जिनका संबंध इस बात से है कि उसके साथ कैसे बातचीत करनी है और एक चुने हुए स्थान पर उसकी पूजा कैसे करनी है। लेकिन वे आज्ञाएँ भी हैं कि चूँकि ईश्वर ही ईश्वर है, इसलिए अपने साथी मनुष्यों के साथ इसी तरह से व्यवहार करें। उनकी धार्मिकता उन कार्यों पर भी निर्भर करती है जिन्हें वे करना चुनते हैं ताकि वे भगवान के समान हों।

तो इस सारी उदारता के लिए प्रेरणा कहाँ से आती है? भगवान की तरह कार्य करने, कर्ज़ माफ करने के लिए मुक्त हस्त से दान देने की प्रेरणा कहाँ से है? वह प्रेरणा कहाँ से आती है? यह स्वयं ईश्वर की ओर से आता है क्योंकि वे लोग बहुत प्यारे, देखभाल करने वाले और दयालु ईश्वर के प्राप्तकर्ता रहे हैं, और बदले में उन्हें वैसा ही करना चाहिए जैसा ईश्वर करता है।

यह डॉ. सिंधिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह सत्र 7, व्यवस्थाविवरण 13-15 है।